بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-28.01.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के महान स्तरीय ख़लीफ़ा-ए-राशिद हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुण तथा कीर्तिमान विशेषताएँ।

सारांश ख़ुत्बः जुम्अः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 28 जनवरी 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَ اِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ۔

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर रज़ी. का वर्णन हो रहा था, आज भी यही वर्णन चलेगा। हमरउल असद की लड़ाई के बारे में लिखा है कि रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम शनिवार के दिन ओहद तशरीफ़ लाए तो अगले ही दिन सुबह सवेरे हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमरू बिन औफ़ मज़नी ने क़ुरैश के दोबारा हमले के विषय में विचार विमर्श तथा तय्यारी की सूचना दी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. से विचार विमर्श के बाद दुश्मन से मुक़ाबले के लिए निकलने का निश्चय किया तथा घोषणा करा दी कि हमारे साथ वही निकले जो पिछले दिन लड़ाई में शामिल था। इस अवसर पर आप स. ने अपना झंडा हज़रत अली रज़ी. अथवा एक रिवायत के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ी. को दिया। मुसलमानों का यह क़ाफ़िला अभी मदीने से आठ मील की दूरी पर हमरउल असद पहुंचा ही था कि मुशरिकों ने भय अनुभव करते हुए मदीने का इरादा छोड़ दिया तथा वापस मक्का के लिए रवाना हो गए।

बनू नज़ीर नामक युद्ध चार हिजरी में हुआ। नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दस सहाबियों के साथ जिनमें हज़रत अबू बकर रज़ी. बनू आमिर के दो मृतकों की हत्या का बदला वसूल करने के लिए यहूदियों के पास पहुंचे तो उन्होंने आप स. को दावत खाने के लिए आमन्त्रित किया। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक दीवार के साथ बैठे थे कि यहूदियों ने आपस की सहमति से षड्यन्त्र किया कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के वध करने का इससे अच्छा अवसर नहीं मिलेगा। उमरू बिन जहाश ने इसके लिए तय्यार

हो गया कि वह मकान की छत पर चढ़ कर आप स. पर एक बड़ा पत्थर गिरा देगा। सलाम बिन मश्कम नामक एक सरदार ने यहूदियों को इस षड्यन्त्र से रुक जाने का सुझाव दिया तथा कहा कि यह इसको वादा तोड़ना कहते हैं तथा जो कुछ तुम सोच रहे हो, उन्हें अवश्य इसकी सूचना मिल जाएगी। अतः ऐसा ही हुआ और आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास आसमान से इस षड्यन्त्र की ख़बर आ गई, हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तुरन्त अपने स्थान से उठे और अपने साथियों को वहीं छोड़ कर तेज़ी से मदीना तशरीफ़ ले आए। आप स. ने हज़रत मुहम्मद बिन मुस्लिमा को बनू नज़ीर के पास इस सन्देश के साथ भेजा कि तुम हमारे नगर से निकल जाओ, क्यूँकि जो योजना तुमने बनाई थी वह विद्रोह था। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहूदियों को दस दिन का समय दिया, यहूदियों ने इन्कार कर दिया तथा कहा कि हम अपना देश नहीं छोड़ेंगे। इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनू नज़ीर के क़िलों का कठोरता के साथ घेराव किया और उनकी सहायता के लिए कोई नहीं आया। ख़ुदा तआला ने यहूदियों के दिलों पर ऐसा प्रभाव डाला कि अंत में वे देश से निकलने के लिए तय्यार हो गए। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अंसार की अनुमति से बनू नज़ीर के युद्ध में हाथ आया माल मुहाजिरों में विभाजित कर दिया तो हज़रत अबू बकर रज़ो. ने फ़रमाया कि ऐ अन्सार की जमाअत, बदले में अल्लाह तुम्हें सम्पूर्ण भलाई प्रदान करे।

बदरुलमोइद नामक युद्ध चार हिजरी की घटना है। अबू सुफ़यान ने वापसी पर घोषणा की थी कि अगले वर्ष हमारा टकराव बदरुलसफ़रा नामक स्थान पर होगा, हम वहाँ पर लड़ाई करेंगे। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उमर रज़ी. को फ़रमाया- उसे कहो, इन्शाअल्लाह। बदर नामक स्थान मदीने से दक्षिण पश्चिम में 150 किमी. की दूरी पर स्थित है। इस्लाम से पहले के दौर में इस स्थान पर हर साल पहली ज़ीकअदः से आठ दिन तक एक बड़ा मेला लगा करता था। अगले साल जब वादे का समय निकट आया तो अबू सुफ़यान मुक़ाबले से घबराने लगा तथा पूरे अरब में यह बात फैला दी कि वह मुसलमानों से मुक़ाबले के लिए बहुत बड़ी सेना तय्यार कर रहा है ताकि मुसलमान इस तय्यारी की ख़बर से घबरा जाएँ और मुक़ाबले के लिए न आएँ। एक रिवायत के अनुसार हज़रत अबू बकर रज़ी. तथा हज़रत उमर रज़ी. भी रसूल करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सेवा में उपस्थित हुए, उन्होंने निवेदन पूर्वक कहा कि या रसूलुल्लाह ! अल्लाह तआला अपने दीन को ग़ालिब करेगा, अपने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को सम्मान देगा, हमने क़ौम के साथ वादा किया था तथा हम उसके विरुद्ध जाना पसन्द नहीं करते, वे अर्थात काफ़िर इसे कायरता समझेंगे, आप स. वादे के अनुसार तशरीफ़ ले चलें, बख़ुदा इसमें अवश्य कोई भलाई है। ये भावनाएं सुन कर आप स. बड़े प्रसन्न हुए। आँहूज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम 1500 सहाबियों के साथ बदर की ओर रवाना हुए किन्तु अबू सुफ़यान सेना लेकर वहाँ न आया। हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब रज़ी. फ़रमाते हैं कि इस्लामी सेना आठ दिन बदर के स्थान पर ठहरी रही। यहाँ सहाबियों ने मेले में व्यापार करके पर्याप्त धन कमाया, यहाँ तक कि अपने मूल धन को दोगुना कर लिया।

बनू मुस्तलिक़ नामक युद्ध शअबान पांच हिजरी में हुआ। इस युद्ध का दूसरा नाम मर्यसीअ नामक युद्ध भी है। आँहुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम तक यह सूचना पहुंची थी कि बनू मुस्तलिक़ ने मुसलमानों पर हमले का निश्चय किया है इस पर हुज़ूर स. सात सौ सहाबियों के साथ आगे बढ़े। एक रिवायत के अनुसार इस अवसर पर मुहाजिरों का झंडा हज़रत अबू बकर रज़ी. के पास था।

इफ़क की घटना अर्थात हज़रत आयशा रज़ी. सुपुत्री हज़रत अबू बकर रज़ी. पर मुनाफ़िक़ों की ओर से झूठा आरोप लगाए जाने की घटना बनू मुस्तलिक़ के युद्ध से वापसी पर पेश आई। सही बुख़ारी में हज़रत आयशा रज़ो. के द्वारा वर्णित रिवायत के अनुसार इस युद्ध से वापस आते हुए एक रात हज़रत आयशा रज़ी. शौच के लिए गईं। जब आप रज़ी. वापस आईं तो आपने अपना इज़तफ़ार नामक नगोनों का हार गुम पाया। आप रज़ी. बार बार तलाश करने गईं और जब वापस आईं तो सेना जा चुकी थी। सफ़वान बिन मुअत्तल ज़कवानी जो सेना में पीछे चलते थे उन्होंने आप रज़ी. को सम्मान पूर्वक अपनी ऊँटनी पर सवार कराया और सेना में आ मिले। मदीना पहुंच कर आप रज़ी. बीमार हो गईं तथा मुनाफ़िक़ों में भांत भांत की बातें फैल गईं। आप रज़ी. फ़रमाती हैं कि मैं इन सारी बातों से अवगत नहीं थी किन्तु मुझे बीमारी में यह बात व्याकुल करती थी कि मैं नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में वह स्नेह नहीं देखती थी। जब आप रज़ी. को इस बात का पता चला तो आप रज़ी. की बीमारी और अधिक हो गई, अतः आप रज़ी. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आज्ञा से अपने वालिदैन के घर आ गईं। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हज़रत उसामा बिन ज़ैद रज़ी. और हज़रत अली रज़ी. से इस सम्बंध में विचार विमर्श किया। हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं कि मैं पूरे दिन रोती रहती तथा मेरे आँसू न थमते, न मुझे नींद आती। एक महीना इसी तरह गुज़रा और फिर एक दिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ आयशा! यदि तुम बरी हो तो अल्लाह अवश्य तुम्ह इस आरोप से मुक्त फ़रमाएगा और यदि तुमसे कोई भूल हुई है तो अल्लाह से मग़फ़िरत चाहो और तौबा करो। हज़रत आयशा रज़ी. ने अपने वालिदैन को इस विषय में चुप देख कर निवेदन किया कि बख़ुदा, मुझे पता चल गया है कि वह बात आप लोगों के दिलों में बैठ गई है। अल्लाह की क़सम, मैं अपना तथा आप लोगों का उदाहरण यूसुफ़ के बाप के जैसा पाती हूँ जिन्होंने कहा था कि- فَصَبْرٌ جَمِيلٌ ۖ وَاللَّهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ अर्थात अच्छी तरह धैर्य रखना ही मेरे लिए उचित है तथा जो बात तुम बयान करते हो उसके निवारण के लिए अल्लाह ही से सहायता मांगी जा सकती है। इसके तुरन्त बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर वह्यी नाज़िल हुई तथा जब वह्यी का प्रभाव जाता रहा तो आप स. मुस्कुरा रहे थे और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ऐ आयशा, अल्लाह की स्तुति बयान करो कि जिसने तुम्हें आरोप से मुक्त कर दिया है। हज़रत आयशा रज़ी. की वालिदा ने कहा कि ऐ आयशा, उठो तथा रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास जाओ। हज़रत आयशा रज़ी. ने कहा कि नहीं अल्लाह की क़सम, मैं आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास नहीं जाऊँगी तथा अल्लाह के अतिरिक्त किसी की प्रशंसा नहीं करूँगी।

हज़रत अबू बकर रज़ी. जो मुस्तह बिन असासा को निकट की रिश्तेदारी के कारण सहयोग की धन राशि दिया करते थे, जब अल्लाह ने हज़रत आयशा रज़ी. को आरोप मुक्त कर दिया तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने क़सम खा ली कि वे अब मुस्तह बिन असासा को ख़र्च नहीं देंगे। इस पर अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाई कि मैं तुममें से समृद्ध तथा सामर्थ लोग अपने निकटवर्ती सम्बन्धियों तथा निर्धनों एवं अल्लाह की राह में ख़र्च करने वालों को कुछ न देने की सौगन्ध न खाएँ। इस आयत क अवतरण के बाद हज़रत अबू बकर रज़ी. ने मुस्तह का ख़र्च दोबारा देना शुरु कर दिया।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुदा तआला ने अपने आचरण में यह दाख़िल कर रखा है कि वह सज़ा देने की चेतावनी वाली पेशगोईयों को तौबा तथा इस्तिग़फ़ार और दुआ और सदक़े से टाल

देता है। इसी तरह इंसान को भी उसने यही आचरण सिखाए हैं। जैसा कि क़ुर्आन शरीफ़ तथा हदीस से यह साबित है कि हज़रत आयशा रज़ी. के बारे में जो मुनाफ़िक़ों ने केवल दुष्टता के कारण असत्य एवं झूठा आरोप लगाया था, उस चर्चा में कुछ सरल स्वभाव वाले सहाबी भी शामिल हो गए थे। एक सहाबी ऐसे थे कि वे हज़रत अबू बकर रज़ी. के घर पर दोनों समय रोटी खाते थे। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उनकी इस ग़लती पर क़सम खाई थी तथा वअीद के तौर पर दंड देने का संकल्प किया कि मैं इस अनर्थ के दंड के रूप में इसको कभी रोटी नहीं दूँगा। इस पर यह आयत नाज़िल हुई (अर्थात, और चाहिए वे क्षमा शीलता से काम लें तथा माफ़ कर दें, क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारी ग़लतियाँ क्षमा करे, और अल्लाह अति क्षमा शील तथा निरन्तर दयावान है) तब हज़रत अबू बकर रज़ी. ने अपने इस संकल्प को तोड़ दिया तथा यथावत् रोटी लगा दी। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि इसी कारण से इस्लामी शिष्टाचार में यह बात शामिल है कि यदि वअीद (दंड देने की धमकी) के रूप में कोई संकल्प कर लिया जाए तो उसका तोड़ना शुभ आचरण में शामिल है। उदाहरणतः यदि कोई अपने सेवक के बारे में क़सम खाए कि मैं इसको अवश्य पचास जूते मारूँगा तो उसकी तौबा याचना पर क्षमा करना इस्लाम की सुन्नत है ताकि अल्लाह के आचरण के साथ इसका आचरण जुड़ जाए, किन्तु वादे को तोड़ना वैधानिक नहीं, वादे को तोड़ देने पर पूछ ताछ की जाएगी परन्तु वअीद अर्थात दंड देने की चेतावी को छोड़ने पर नहीं।

मक्का के क़ुरैश तथा मुसलमानों के बीच तीसरा बड़ा युद्ध अहज़ाब नाम की लड़ाई है जो शव्वाल पाँच हिजरी में हुई। बनू नज़ीर के यहूदी देश से निकले जाने के बाद ख़ैबर चले गए थे। वहाँ जाकर उन्होंने मक्का के क़ुरैशियों तथा अरब के अन्य क़बीलों के साथ समझौते किए तथा दस हज़ार सैनिकों की सेना तय्यार कर ली। जब यह ख़बर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मिली तो आप स. ने विचार विमर्श किया तथा हज़रत सलमान फ़ारसी रज़ी. के सुझाव पर मदीने का उत्तरी भाग में जो खुला हुआ था, छः दिनों में उस ओर लगभग साढ़े तीन मील लम्बी खाई खोदी गई। खाई खोदने में कोई मुसलमान पीछे नहीं रहा। जब हज़रत अबू बकर रज़ी. और हज़रत उमर रज़ी. को टोकरियाँ न मिलतीं तो जल्दी में अपने कपड़ों में ही मिट्टी भर कर ले जाते। हज़रत अबू बकर रज़ी. मुसलमानों के एक भाग का नेतृत्व कर रहे थे तथा बाद में इस स्थान पर एक मस्जिद बना दी गई जिसे मस्जिदे सिद्दीक़ कहा जाता था।

हज़रत अबू बकर रज़ी. का वर्णन आगे भी जारी रहने का इरशाद फ़रमाने के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मुकर्रमा मुबारका बेगम साहिबा पतनी मुख़तार अहमद गोन्दल साहब, मुकर्रम मीर अब्दुल वाहिद साहब और मुकर्रम सय्यद वक़ार अहमद साहब ऑफ़ अमरीका का सद्वर्णन तथा जनाज़े की नमाज़ पढ़ाने का ऐलान फ़रमाया। हुज़ूर अनवर ने समस्त मृतकों की मग़फ़िरत तथा दर्जात की बुलन्दी के लिए दुआ की।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131